राजकीय महाविद्यालय, अमोड़ी (चम्पावत)

नाट्यतत्त्वम्

अतुलकुमारमिश्रः
सहायकाचार्यः, संस्कृतविभागः

संस्कृत विभाग

नाट्य का उद्भव

- संस्कृत दृश्यकाव्य का उद्भव कब और किस प्रकार से हुआ है, इस प्रश्न का समाधान निश्चित करना कठिन है।

१. नाट्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कतिपय विद्वानों का मत है कि वैदिक सूक्त ही नाटकों का प्राचीनतम रूप है।

- सूक्तों का सम्बन्ध वैदिक कर्मकाण्ड से नहीं है। दीर्घकाल तक चलने वाले यज्ञों में कर्मकाण्ड से क्लान्त पुरोहितों तथा दर्शकों के मनोरंजन के लिए कुछ नाटकों का अभिनय होता हो, ऐसा विद्वानों का मत हैं।

- संस्कृत नाटकों का लक्ष्य मनोरंजन था, न की वैदिक कर्मकाण्ड। इसीलिए कर्मकाण्ड से असम्बद्ध सारी सामग्री नाट्यवेद में डाल दी गयी।

संस्कृत विभाग

२. नाट्यविज्ञान पर सर्वप्रथम ग्रन्थ नाट्यशास्त्र ही प्राप्त होता है, जिसका काल १०० ई० पू० से ३०० ई० के बीच माना जाता है।

- ब्रह्मा ने देवताओं के प्रार्थना पर चारों वेदों से सार भाग लेकर नाट्यवेद के रुप में पंचम वेद का निर्माण किया।

जग्राह पाठ्यमृग्वेदात्सामभ्यो गीतमेव च।

यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि॥ ना० १/१७

- अमृतमन्थन, और त्रिपुरदाह नामक रूपक सर्वप्रथम अभिनीत हुए। ये ब्रह्मा के द्वारा रचित थे।

संस्कृत विभाग

नाट्य- सिद्धान्त

- साहित्य के सभी प्रकारों में रूपक या नाट्य श्रेष्ठ माना गया है- नाटकान्तं कवित्वम् ॥
- भरत ने नाट्य शास्त्र में कहा है कि- न हि रसादृते कश्चिदप्यर्थः प्रवर्तते।

नाट्य- लक्षण

अवस्थानुकृतिर्नाट्यम् रूपं दृश्यतयोच्यते।
रूपकं तत्समारोपाद् दशधैव रसाश्रयम्॥

नाट्य, रूप और रूपक ये तीनों शब्द दृश्य काव्य के लिए प्रयुक्त होते है।

संस्कृत विभाग

रूपकों के भेद

नाटकं सप्रकरणं भाणः प्रहसनं डिमः ।
व्यायोग समवकारौ वीथ्यङ्कैहामृगा इति ॥

१. नाटक-

- ✓ नाटक का कथानक प्रसिद्ध इतिहास या पुराण से निर्दिष्ट होता है।
- ✓ नाटक में धीरोदात्त कोटि का नायक होता है।
- ✓ नाटक का मुख्य रस श्रृंगार या वीर रस होता है।
- ✓ नाटक में पांच से दस अंक तक होते है।
- ✓ नाटकों में पांच अर्थप्रकृतिया, पाँच अवस्थाएँ तथा पाँच सन्धियों का प्रयोग होता है।

संस्कृत विभाग

अर्थप्रकृतियाँ

बीज, बिन्दु, पताका, प्रकरी और कार्य ॥

कार्यावस्थाएँ

आरम्भ, यत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति फ़लागम ॥

संधियाँ

मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श, निर्वहण ॥

संस्कृत विभाग

२. प्रकरण

- ✓ इसका कथानक कविकल्पित होता है।
- ✓ इसका नायक धीरप्रशान्त कोटि का होता है।
- ✓ इसमें नायिका दो प्रकार की होती है- कूलीना, वैश्या कोटि।
- ✓ प्रकरण का उदाहरण है मृच्छकटिकम्।

३. भाणः

- ✓ यह एकाङ्की नाटक है।
- ✓ इसमें वीर या शृँगार रस का प्रयोग होता है।
- ✓ लीलामधुरम् इसका उदाहरण है।

संस्कृत विभाग

४.प्रहसन

- ✓ यह हास्य-प्रधान रूपक है।
- ✓ यह एकाङ्की नाटक है।
- ✓ कन्दर्पकेलि, धूर्तचरित इसके उदाहरण है।
- ✓ प्रहसन के तीन भेद होते है।

५. डिम

- ✓ डिम की कथावस्तु इतिहासप्रसिद्ध होती है।
- ✓ इसमें चार अङ्क होते है।
- ✓ त्रिपुरदाह इसके उदाहरण है।
- ✓ हास्य और श्रृंगार के अतिरिक्त सभी रस होते है।